भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 18 अंक : 6 | सोमवार, 26.6.1995 | वार्षिक चंदा : 50.00

ब्रह्मप्रवाह

गुरुपूर्णिमा का दिव्य संदेश

सभी सत्संगी बंधुओं को - हरिभक्तों और मुक्तों को.....

सद्गुरुवर्य योगीजी महाराज ने अनहद कृपा करके केवल अनुग्रह से ही, स्वयं का प्यारा '**अक्षरधाम**' हम सभी को बक्षिश में दे दिया है। इतनी बड़ी मौज का कोई मूल्य लिया नहीं, सिर्फ मुफ्त में ही ! उसे प्रेम से, उमंग से, सम्पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से स्वीकारें और उनके या सदगुरुओं की केवल प्रसन्नता से ही जब सब कुछ बनता है, तो एक महीने दि. 24.7.83 तक तो श्रेयार्थी साधकों, गृहस्थों, त्यागियों सभी संत के वचन का सहारा लेकर हर रोज दो घंटे के भजन, ध्यान, प्रार्थना और सत्कर्म की - नियमित ही आदत डालें। तो प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू.बा., प.पू.बेन, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. हरिभाई साहेब, प.पू. कोठारीस्वामी और प.पू. प्रेमस्वामी जैसे परम एकांतिकों की तरह ही दिव्य सुख, शांति, बल और आनंद सहज ही भोगते हो जाएं और सुहृद्भाव से वर्तकर अन्यों को भी परमानंद की प्राप्ति करा सकें।

ऐसी परम सेवा - अत्यधिक बड़े पुरुषों की अनुवृत्ति के मुताबिक ही मन, कर्म और वचन से रखकर अभिप्राय की भक्ति करें और भगवान तथा संत की कृपा दृष्टि से निर्दोषभाव दृढ़ कर लें। साधु का निरंतर संबंध और बुद्धियोग प.पू.बापा ने अनुग्रह से ही दिया है। (अक्षर मू. गुणातीत की बात प्र -2 की 84,100 प्र -1 की 166 प्र -3 की 32,38 को पक्का करके) तो प्र -1 की 172, प्र-5 की 134,242 के मुताबिक स्वयं के आँगन में ही घोड़ा घुमा लेने से करोड़ों अश्वमेघ यज्ञों की–ब्रह्मयज्ञ की पूर्णाहुति करके सच्ची गुरुपूर्णिमा मना लेनी। वही सच्चा सद्गुरु पूजन माना जायेगा और अक्षरधाम की ही प्राप्ति देह रहते हुए ही अनुभव होगी, भोगा जाएगा और प्राप्त होगा ही। तो नींव के ये चार सूत्रों को जीवन जीने की आदत एक महीने तक तो डाल ही देना:

1. भजन - वच. ग्र.प्र. 23 और अंत्य 11 के मुताबिक
2. ध्यान - अंत्य 9 और 31 के मुताबिक
3. प्रार्थना - अंत्य 26, मध्य- 25 प्र. 24 के आखिरी पैराग्राफ के मुताबिक
   और
4. प्रभु या प्रत्यक्ष संत की प्रेरणा या आज्ञा के मुताबिक जोड़ में रहकर करा हुआ सत्कर्म।

परिणामस्वरूप भगवान, संत के संग दो भिन्न अंग वाले भगवदीयों के साथ हिलमिल कर, रसरूप होकर सेवा, समागम, भक्ति और सत्संग करते हो जाएं। जैसे लंडन मंडल के भक्तों - मुक्तों आज्ञास्वरूप में अव्वल कक्षा में गिने जाते हैं। ऊपर लिखे कार्यक्रम के मुताबिक वे प.पू. साहेब के प्रसंग से अनुवृत्या भक्ति सिद्ध करके

अभिप्राय समझने लगे हैं और सर्वदेशियता तथा अभेद दृष्टि सिद्ध करने का आर्दश रखते हैं। वैसे ही देश में और अन्य जगहों पर सभी ऐसी एकांतिक भक्ति सिद्ध करो और गुरुपूजन पूर्ण करो, यही सभी बड़ों के अंतर के शुभाशिष मिलें।

-लि. आपके ही दादुकाका के हेतपूर्वक जय स्वामिनारायण!

✡✡✡✡✡

प्रगट के उपासकों का महत्वपूर्ण दिन - गुरुपूर्णिमा !

गुरुपूर्णिमा यानि गुरु शिष्य के संबंध को दृढ़ करता हुआ पवित्र व मंगलकारी दिन.....

आज कहीं भी दृष्टि डालते हैं, तो मानव अभावग्रस्त नजर आता है..... किसी को धन का, किसी को बल का, किसी को विद्या का, किसी को पुत्र सुख का, किसी को देह के रोग का - किसी न किसी बात से सब दुःखी हैं। पर, यदि जीवन में प्रगट सद्गुरु हों तो इन सभी दुःखों से मुक्त हुआ जा सकता है। प्रगट सच्चे संत से जुड़कर व्यक्ति सांसारिक मोह, आसक्तियों से हटकर परमात्मा की ओर अपना ध्यान एकाग्र कर ले, तो ही उसे जीवन में किसी भी प्रकार का अभाव महसूस नहीं हो पाएगा। जैसे पेड़ के पत्तों या फूलों को ऊपर - ऊपर से चाहे कितना भी पानी देते रहो वह ज्यादा नहीं चलेगा.....इतना ही नहीं वह सड़ भी सकता है। असली पोषण तो पेड़ की जड़ को ही पानी देने से होता है। वैसे ही गुरु मनुष्य की जड़ समान है। अपने ढ़ंग से भले ही व्यक्ति कितने व्रत, तप, ध्यान करके प्रभु की उपासना करे - उससे संस्कार जरूर पड़ेंगे पर करोड़ों जन्मों की अहंता, ममता, प्रकृति - स्वभाव के जंजालों से मुक्त नहीं हो पाएगा। उससे मुक्त तो केवल प्रगट सच्चे गुरु के संबंध से हो सकता है, क्योंकि गुरु ही भीतर के दोषों का दर्शन कराता है। उन्हें टालने हम से भजन करवाता है, भजन करने का बल देता है व स्वयं भी हमारे लिए भजन करता है।

सच्चा गुरु कभी भी चमत्कार, सिद्धियाँ आदि दिखाकर सेवकों को गुमराह नहीं करेगा.....उसकी सच्ची सिद्धि तो अंतःकरण की वह शुद्ध स्थिति है, जिसमें भगवान के सिवा दूसरे किसी का स्थान नहीं रह पाता। सच्चा गुरु कभी भी अपनी महत्वाकांक्षाओं, वृत्तियों, अपेक्षाओं को पूरा करने अपने शिष्यों से काम नहीं लेता.....बल्कि अपने शिष्यों के गुनाहों का प्रायश्चित भी वह स्वयं करता है। गुरु शिष्य को ज्ञान चक्षु देकर उसके अज्ञान को दूर करके भीतर में विराजमान प्रभु की मूर्ति का दर्शन कराता है।

सो, जीवन में प्रगट गुरु का होना खूब जरूरी है..... भगवान श्रीराम स्वयं प्रभु का अवतार माने गए, फिर भी उन्होंने गुरु वशिष्ठ को जीवन में प्रथम स्थान दिया। भगवान कृष्ण ने भी सांदीपनी गुरु को ही आगे रखकर प्रगट गुरु की अनिवार्यता का आदर्श रखा। पांडव कुल में गुरु द्रोणाचार्य का स्थान भी महत्वपूर्ण था। राजा परीक्षित के मोह के क्षय का उपाय गुरु ने ही बताया और इससे भी अधिक अवतारों के अवतारी श्री सहजानंदस्वामी ने गुरु रामानंदस्वामी के प्रति अद्वितीय गुरुभक्ति की परम्परा धरती पर अखंडित रखी, युगल उपासना प्रवर्तायी... भगवान व भक्त यानि अकेले भगवान नहीं और ना ही अकेले गुरु.....दोनों ही जीवन में होने जरूरी हैं - प्रभु व प्रभुस्वरूप संत ! यूं प्रभु आराध्य हैं और प्रभुस्वरूप संत हमें प्रभु तक ले जाने का सेतु हैं।

करूणा करके भगवान स्वामिनारायण ने 'गुरुकृपा' Theory of grace सबसे सरल मार्ग शिष्यों के लिए रख दिया। साधनों पर जोर नहीं दिया.....जिस शिष्य ने गुरु के अल्प वचन को भी लेकर जीने का प्रयन्त किया उसकी चौरासी लाख योनि काटकर प्रसन्नता बक्षिश दे दी। भगवान स्वामिनारायण ने वच.ग.प्र. 58 में यहां तक लिखा है कि सत्पुरूष को जो व्यक्ति जिस दृष्टि से निहारता है, उसे वैसे ही गुण बक्शिश में मिल जाते हैं। यदि जीव सत्पुरूष को अतिशय निष्कामी, निर्लोभी, निःस्वादी, निःस्नेही और निर्मानी समझेगा तो उसमें भी वैसे ही गुण आ जाएगें और सभी विकारों से मुक्त हो जाएगा - ये गुण बिना कोई साधन किए मुफ्त में दे दिए। ऐसे गुरु कहाँ मिलेंगे ?

यूं सामान्य इस लोक की विद्या सीखने के लिए भी

गुरु की जरूरत है, तो सर्वोत्तम ब्रह्मविद्या तो गुरु गुणातीत के बिना कैसे प्राप्त हो ? इसलिए श्रीजी महाराज ने ग.प्र.54 के वचनामृत में कहा है कि - **स्वधर्म, ज्ञान, वैराग्य और माहात्म्यज्ञान के सहित ही भगवान की भक्ति से युक्त ऐसा जो भगवान का एकांतिक साधु उससे ही भागवतधर्म का पोषण होता है और फिर जीव का जो मोक्षद्वार है वह भी ऐसे साधु के प्रसंग से ही होता है।**

उसमें भी श्रीजी महाराज ने साधु के प्रसंग से ही ये शब्द पर बहुत जोर दिया है। साकार स्वरूप की उपासना पर अत्यधिक जोर दिया है। हम सब को प्रत्यक्ष गुरुहरि की प्राप्ति केवल कृपा से हो गई है और वे भी कैसे सहज अपने शिष्यों के Level पर common level पर उतरकर शिष्यों जैसा ही वर्तते हैं। प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. दिनकरभाई जैसे गुणातीत स्वरूपों हमारे साथ - हमारे जैसे ही बनकर रहे-रहते हैं, जबकि उन्हें प्रकृतिपुरुष तक किसी भी पदार्थ का संकल्पमात्र नहीं होता और उनकी हर क्रिया प्रभु में से आती है। यूं स्वयं सर्व प्रकार से समर्थ होते हुए भी वे हमारे जैसे ही बनकर रहते हैं।

वे हमारी हर पल सहायता करना चाहते हैं, पर हम ही कभी अपने मन के बवंडरों में, वृत्तियों में बहकर, संसार द्वारा फैंके गए मोहक दिखाई देने वाले पदार्थों में खिंचकर उनकी सहायता को समझ नहीं पाते, बल्कि उन्हें उलाहना देने चूकते नहीं और स्वार्थियों के पंजे में फंस जाते हैं। पर यदि शिष्य पल - पल निम्न तीन - चार बातें भी पक्की समझदारी से, दृढ़ निष्ठा से पकड़कर चले, तो अवश्य उसे अपने ध्येय की प्राप्ति होगी ही।

- **जहां धबक - धबक होता है वहां प्रभु अखंड विराजमान हैं, वे मेरे हैं।**
- **वे परम हितकारी ही हैं।**
- **वे सदा दिव्य, साकार, कर्ताहर्ता, सर्वोपरि प्रगट ही हैं।**

जब भगवत् कृपा से ही ऐसे सद्गुरु मिले हैं तो उनकी एक - एक, छोटी से छोटी बात को भी महत्वपूर्ण व परमावश्यक समझ कर श्रद्धापूर्वक उसका अनुसरण कर लेना चाहिए और .....जीव को यथार्थ सुख तो प्रत्यक्ष स्वरूप जो गुरुरूप में मिला है उसका मन, कर्म, वचन से प्रसंग करने से ही प्राप्त होता है।

तो आईए, गुरुपूर्णिमा के पवित्र दिन पर हम सब निश्चय करें कि ऐसे प्रगट गुरु का संबंध होने पर जीवन में जो कुछ भी बने उसके कर्ताहर्ता, नियंता व प्रेरक मुझे मिले प्रत्यक्ष गुरु ही हैं और भजन का ही एक मात्र सहारा लें, तो गुणातीत स्वरूपों हमारी इसी दृढ़ निष्ठा को सच्चा गुरुपूजन, सच्ची गुरुदक्षिणा मानकर हमें निहाल - निहाल कर देंगे.....

✡✡✡✡✡

चातुर्मास के विशेष नियम.....

चातुर्मास के पवित्र दिन नजदीक आ रहे हैं....सभी शास्त्रों में चातुर्मास की खूब महिमा कही है.....पूरे वर्ष चाहे किन्हीं कारणवश व्यवहारिक कामों आदि में व्यस्त होने के कारण हम नियमित रूप से भजन नहीं कर पाये हों, तो इन चार महिनों में पूरे वर्ष का stock भर लेना चाहिए जिससे balance चलती रहे।

जैसे फसल को ढोर - बकरियों आदि से बचाने के लिए किसान अपने खेत में चारों तरफ हेज कर देता है या लोहे की तार बांध देता है वैसे ही इन्द्रियों - अंतःकरण, मन के भावों को संयम में रखने प्रभुमय बनाने, प्रभु की मूर्ति के चिन्तन में निमग्न रखने नियम होने जरूरी हैं। नियम हमें अनुशासित रखते हैं.....जागृत रखते हैं कि हम प्रभु व प्रभुस्वरूप संत के हैं।

भगवान रखे संतों द्वारा दिए गए ये नियम यदि स्वयं को प्रभु का प्रकाश मानकर दिल की सच्चाई से पालेंगे तो हम अपने अंदर एक नया परिवर्तन अुनभव करेंगे तो हमारे इन्द्रियों अंतःकरण का प्रवाह जगत सन्मुख न होकर प्रभु सन्मुख हो जायेगा, क्योंकि सत्पुरुष के दिए वचन में खूब बल होता है.... आईये, हम सब प्रभु का ही एक भरोसा रखकर, सम्पूर्ण जीवन डोर उन पर ही छोड़कर, उनके ही बल से इन नियमों को पालने का भरसक प्रयास करें जिससे भगवत्स्वरूप संत की प्रसन्नता का पात्र बन जाएं.....

चातुर्मास (9 जुलाई 95 रविवार से 3 नवम्बर 95 शुक्रवार तक) के नियम.....

1) दैनिक हर क्रियाएँ - जैसे सुबह उठना, बोलना, स्नान करना, चाय - नाश्ता करना, भोजन करना, बाहर जाना - आना, सोना आदि का आरम्भ भगवत्स्वरूप संत की स्मृति समेत एकाध मिनट जपयज्ञ या अजपाजप करके ही करें।
2. संत का ऐसा जोग दिया, उसके उपकारस्वरूप रोज सुबह उठते ही हमें मिलें प्रगट गुरुहरि की स्मृति ही करके 3 मिनट ध्यान में बैठकर इन्हें धन्यवाद - धन्यवाद कहने का अभ्यास करना।
3. जिन्हें सुविधा हो वे - सुबह के भजन व शाम की धून व कथा में मंदिर- सत्संग केन्द्र में आयें। जो ना आ पायें वे अपने घर सुबह 15 मिनट धून व सांय आरती के बाद 15 मिनट धून अचूक करें।
4. मंदिर/सत्संग केन्द्र के करीब रहते हों या काम पर जाते हुए जिन्हें मंदिर/सत्संग केन्द्र रास्ते में आता हो व वे बहनें जो मंदिर आ पायें - प.पू. काकाजी के स्मृति स्थल की या सत्संग केन्द्र में ठाकुरजी की रोज 31 प्रदिक्षणा करें और जो रोज ना आ पायें वे चातुर्मास दौरान मंदिर सत्संग केन्द्र आयें तब 51 प्रदिक्षणा कर जायें।
5. मंदिर/सत्संग केन्द्र से जो करीब रहते हों, वे सायं आरती के दर्शन करने आ जायें। जो मंदिर/सत्संग केन्द्र में ना आ पाते हों-वे घर पर परिवार में जो - जो हाजिर हो सब मिलकर हर रोज सांय आरती करें।
6. हर एकादशी, शुक्ला नौमी व पूर्णिमा पर मंदिर दर्शन करने आ जायें।
7. सावन का पूरा महीना यानि 28 जुलाई, शुक्रवार से 26 अगस्त, शनिवार तक एक बारी भोजन लें।
8. 9 जुलाई - नियम की एकादशी, 18 अगस्त - जन्माष्टमी, 5 सितम्बर जलझीलनी एकादशी व 3 नवम्बर - कार्तिक शुक्ला एकादशी - इन चारों दिन अवश्य पक्का व्रत रखें।
9. अवतार पुरुषों व भगवत्स्वरूप संतों की जीवनी एवं वचनामृत व स्वामी की बातें जैसे अध्यात्मग्रंथों एवं भगवत् कृपा सत्संग पत्रिका के मननीय लेखों का रोज़ नियम से अध्ययन करें।
10. प.पू. काकाजी को सुहृद्भाव खूब पसंद था, तो हम अपने साथी मुक्तों के साथ मिलजुल कर प्रेम से रहें और हर प्रसंग पर गुणातीत स्वरूप को ही कर्ता हर्ता मानकर उसका सहर्ष स्वीकार कर पाएं इस हेतु रोज सुबह पूजा में प्रर्थना रखें और सारे दिन में संतमान्य व्यवहार करने में कोई फर्क पड़ा हो, आपस में किसी से मिलजुल कर नहीं रह पाये हो, किसी बात पर किसी से चिड़ गए हों, किसी का कुछ चुभ गया हो तो रात को सोते समय 10 मिनट प्रायश्चितरूप प्रार्थना कर लें।
11. रोज़ सायं या रात्रि को आधा घंटा Brisk तेज walking करें।

व्रतोत्सवसूची

1)	दि.	9.7.95	रविवार	नियम की एकादशी, निर्जला व्रत, चातुर्मास प्रारंभ
2)	दि.	12.7.95	बुधवार	गुरुपूर्णिमा
3)	दि.	23.7.95	रविवार	एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
'ANIRDESH' Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Chowdhry Mudran Kendra** 12/3, Sri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053